SET-A ① 12/2638

कक्षा-12वीं **आदर्श उत्तर** विषय- अर्थशास्त्र (1210)

माध्यम - हिन्दी पूर्णांक - 100

प्र.क्र.1- सही विकल्प

उ. = 1- (अ) स्थिर पूंजी, 2) (ब) - जे.बी. से का, (3) (अ) कमि (4) - (ब) घटती है, (5) (ब) - ऊपर की ओर (6) (ब) प्रभावपूर्ण मांग। (1×6)

प्र.क्र.2 रिक्त स्थान -

उ. = 1) गुणात्मक, 2) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, (3) संकुचित (4) भुगतान, (5) पूरक, (6) कीमत (1×6)

प्र.क्र.3 सत्य / असत्य

उ. = 1) सत्य, (2) सत्य, (3) असत्य, (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य (1×6)

प्र.क्र.4. सही जोड़ी-

उ. = (1×6)

अ		ब
1) भौतिक पूंजी स्टॉक	—	निवेश
2) 1 – MPC	—	सीमान्त बचत प्रवृत्ति
3) कार व पेट्रोल	—	पूरक वस्तुएं
4) अंतिम उपभोक्ता	—	अंतिम वस्तुएं
5) समष्टि अर्थशास्त्र	—	योगात्मक अर्थशास्त्र
6) कर राजस्व	—	बजटीय प्राप्तियाँ

प्र.क्र. 5 एक शब्द / वाक्य

उ.क्र. (1) खोए हुए अवसर की लागत। (1×6)

(2) शून्य से अधिक तथा 1 से कम होता है।

(3) जब मुद्रा का मूल्य बढ़ता है और कीमतें कम होती हैं।

(4) जुलाई 2017 ।

(5) बचत फलन = F(Y)

(6) वित्त मन्त्री ।

उ.क्र. 6 = वस्तु के उत्पादन के स्थिर साधनों के प्रयोग के लिए किये जाने वाले व्ययों के योग को स्थिर लागत (अपरिवर्तनीय लागत) कहते हैं। 2

अथवा

उत्पादन तकनीक में सुधार, श्रम विभाजन, विशिष्टीकरण आदि के कारण उत्पादन में आन्तरिक एवं बाह्य बचतें प्राप्त होती हैं।

Anjana

उ० 7 किसी राष्ट्र में एक निश्चित समयावधि के भीतर अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, उनके मौद्रिक मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं। (2)

अथवा

स्वनियोजितों की मिश्रित आय में श्रम तथा मालिकों की कुल आय और मध्यवर्ती उद्योगों के अर्जित लाभ सम्मिलित होते हैं। यह आंशिक रूप से श्रम आय और आंशिक रूप से पूँजी आय है।

उ० 8. समग्र माँग के घटक – (1) उपभोग, (2) निवेश, (3) सरकारी व्यय (4) शुद्ध निर्यात। (2)

अथवा

अतिरेक माँग की स्थिति में उत्पादन व रोजगार में कम दर से वृद्धि होती है तथा कीमतों में वृद्धि की दर अधिक तेज होती है। कीमतों के बढ़ने पर निर्धन वर्ग और निश्चित आय वाले वर्ग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि कीमत वृद्धि के कारण उनकी क्रय शक्ति कम हो जाती है।

उ० 9 व्यष्टि अर्थशास्त्र की कोई दो विशेषताएं – (कोई भी) 2

(1) अर्थव्यवस्था के छोटे-छोटे अंशों का अध्ययन करता है।

(2) प्रमुख विषय 'कीमत सिद्धान्त' का विश्लेषण करता है।

अथवा

बाजार व्यवस्था में प्रत्येक वस्तु तथा सेवा की एक निर्धारित कीमत होती है। क्रेताओं एवं विक्रेताओं का परस्पर इसी कीमत पर विनिमय होता है।

उ० 10 एक बार जब 'निर्गत' उत्पन्न हो जाता है, फर्म उसे बाजार में बेच देती है और 'आगम' प्राप्त करती है। 'आगम' तथा 'लागत' के बीच के अन्तर को 'फर्म का लाभ' कहते हैं। (2)

अथवा

उत्पादन लागत का आशय उन सभी भुगतानों से है जो उत्पादन पर व्यय किये गए हैं। भले ही इसमें उत्पादक द्वारा प्रदान की गयी पूँजी, भूमि, श्रम आदि सेवाओं का पुरस्कार भी शामिल हो।

उ० 11 बजट सेट तथा बजट लाइन में अंतर - बजट सेट से आशय उन दो वस्तुओं के संभावित संयोजन के सेट से है, जिनका उपभोक्ता उपभोग करता है, जिसे वह अपनी आय और दी गई कीमत में खरीद सकता है। जबकि बजट लाइन दो वस्तुओं के संयोजन के पूरे संग्रह की चित्रमय प्रस्तुति है। बजट लाइन उपभोक्ता की आय और दो वस्तुओं की कीमतों पर निर्भर करती है। आय में वृद्धि होने पर उपभोक्ता की बजट लाइन दायीं ओर खिसक जाती है। (3)

P.T.O.

अथवा

मांग की कीमत लोच यह स्पष्ट करती है कि एक वस्तु के मूल्य में एक निश्चित परिवर्तन होने पर उसकी मांग में कितना परिवर्तन होगा।

मांग की कीमत लोच = मांगी जाने वाली मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन / कीमत में आनुपातिक परिवर्तन

उ० 12 पूर्ति – वस्तु की वह मात्रा जो वास्तव में बाजार में एक निश्चित कीमत पर विक्रय के लिए रखी गयी है। (3)

स्टॉक – किसी वस्तु की वह मात्रा जो बाजार में कम समय में सूचना मिलने पर विक्रय के लिए लायी जा सकती है।

अथवा

पूर्ति – किसी वस्तु की पूर्ति का अर्थ उस मात्रा से होता है जो किसी निश्चित समय में कीमत विशेष पर बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध होती है।

उ० 13 मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी वस्तु की एक से अधिक इकाइयों का उपभोग करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उपभोग की जाने वाली अंतिम इकाई को सीमान्त इकाई कहते हैं तथा इस अंतिम इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता कहते हैं। (3)

अथवा

निम्नस्तरीय वस्तुओं की मांग उपभोक्ता की आय के विपरीत दिशा में जाती है, निम्न स्तरीय वस्तुएँ कहलाती हैं। निम्नस्तरीय खाद्य पदार्थ, मोटे अनाज, देशी घी आदि।

उ० 14 बजट लाइन – बजट रेखा दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करती है जिन्हें उपभोक्ता एक दी हुई मौद्रिक आय द्वारा वस्तुओं की कीमत पर खरीद सकता है।

अथवा

उपभोक्ता के पास सीमित आय होती है और बाजार में वस्तुओं के दाम तय होते हैं। उपभोक्ता अपनी आय के भीतर रहकर ही वस्तुएँ खरीद सकता है। इस कारण वह यह तय करता है कि किस वस्तु पर कितना खर्च करता है। इसी योजना को उपभोक्ता बजट कहते हैं।

P.T.O.

Akgom

3.15 उपयोगिता ह्रास नियम के अपवाद (कोई चार व्याख्या सहित) (4)

1) वस्तु की अत्यधिक न्यून मात्रा (इकाई) –
2) मादक पदार्थ –
3) धन संचय की प्रवृत्ति –
4) विचित्र तथा दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह –

अथवा

तटस्थता (उदासीनता) वक्र की विशेषताएँ –
1) उदासीनता वक्र ऊपर से नीचे तक दायें तरफ गिरते हैं –
2) उदासीनता वक्र का स्वरूप पूर्ति वक्र के समान होना –
3) उदासीनता वक्र लम्बवत् नहीं हो सकते –
4) उदासीनता वक्रों का एक-दूसरे के समानान्तर होना आवश्यक नहीं है।

3.16 धातु मुद्रा के चार गुण – (विवरण सहित) (4)

1) टिकाऊपन –
2) मूल्यवान –
3) समानता –
4) स्थिरता –

अथवा

बैंक दर – इस दर पर बैंक रिजर्व बैंक से दीर्घकालीन ऋण प्राप्त करते हैं। बैंक जो ऋण लेते हैं उस पर निर्धारित ब्याज दर, बैंक दर कहलाती है। बैंक दर हमेशा रेपो दर से ज्यादा होती है। बैंक दर बढ़ने से उपभोक्ता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

रेपो दर – इस दर पर बैंक रिजर्व बैंक से अल्पकालीन ऋण प्राप्त करते हैं। जब बैंक अपनी प्रतिभूतियों को गिरवी रख कर जिस ब्याज दर पर रिजर्व बैंक से उधार लेते हैं उसे रेपो दर कहते हैं। रेपो दर, बैंक दर से कम होती है। रेपो दर बढ़ने पर उपभोक्ता पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ता है।

3.17 बजट के उद्देश्य – 1) हिसाबदेयता —, 2) आय-व्यय का अनुमान लगाना —, 3) राजकोषीय उपकरण — 4) आर्थिक नियंत्रण – (4)

अथवा

सरकार के बजट मे सर्वप्रथम चालू वित्तीय वर्ष में होने वाले व्यय के अनुमान लगाये जाते हैं। सरकार द्वारा किये जाने वाले सम्पूर्ण सार्वजनिक व्ययों को दो भागों में बाँटा जा सकता है – राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय।

P.T.O

3.18 लागत वक्र यू (U) आकृति के — (4)

1) जब सीमान्त लागत गिरती है तो उसके साथ औसत लागत भी गिरती है, परन्तु औसत लागत तब भी गिरती रहती है जब सीमान्त लागत निम्नतम स्तर पर पहुँचकर उठने लगती है।

2) सीमान्त लागत के स्थिर होने की दशा में औसत लागत और सीमान्त लागत बराबर होंगे। किन्तु लागतों के बढ़ने की दशा में सीमान्त लागत, औसत लागत को उसके निम्नतम बिन्दु पर काटती है।

अथवा

एक आगत के सीमान्त उत्पाद तथा कुल उत्पाद के बीच सम्बंध —

1) कुल उत्पाद तथा औसत उत्पाद कभी भी शून्य नहीं हो सकते —
2) जब कुल उत्पाद अधिकतम होता है तब सीमान्त उत्पाद शून्य होता है —
3) जब कुल उत्पाद गिरने लगता है तो सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है —
4) उत्पाद की प्रारंभिक अवस्था में कुल उत्पाद में वृद्धि होती है वह बढ़ती हुई दर पर होती है।

3.19 कुल परिवर्ती लागत एवं स्थिर लागत में अंतर — (4)

1) स्थिर लागत उत्पादन बंद होने पर भी शून्य नहीं होती, जबकि परिवर्तनीय लागत शून्य हो जाती है।

2) स्थिर लागतों पर उत्पादन की मात्रा में हुए परिवर्तनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जबकि परिवर्तनशील लागत प्रभावित होती है।

3) स्थिर लागत का सम्बंध स्थिर ~~साधनों~~ साधनों से होता है, जबकि परिवर्तनशील लागत का संबंध अस्थिर साधनों से होता है।

4) औसत स्थिर लागत उत्पादन में वृद्धि के साथ घटती जाती है, जबकि औसत परिवर्तित लागत प्रारम्भ में घटती है और एक सीमा के बाद बढ़ने लगती है।

अथवा

उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होने के कारण —

1) साधनों की अविभाज्यता —
2) उत्पत्ति के साधन एक-दूसरे के पूर्ण स्थानापन्न नहीं होते —
3) उत्पत्ति के एक या अधिक साधनों का स्थिर रहना —
4) उत्पादन के साधनों की सीमितता —

Aleyas

उ० 20 घाटे का बजट वह व्यवस्था है जिसमें सरकार अपनी आय की तुलना में व्यय अधिक करती है इस व्यवस्था में सरकार अपने घाटों की पूर्ति नोट छाप कर करती है ——।

अथवा

सार्वजनिक वस्तुएँ – राष्ट्रीय सुरक्षा, सड़कें, लोक प्रशासन आदि ये वस्तुएँ सरकार द्वारा प्रदान करनी चाहिए क्योंकि –
1) इनका लाभ केवल एक व्यक्ति तक सीमित न होकर सभी को मिलना चाहिए। 2) इन वस्तुओं के उपयोग से किसी भी व्यक्ति को वंचित नहीं किया जा सकता। 3) ये वस्तुएँ प्रतिस्पर्धात्मक नहीं होती हैं।

उ० 21 भुगतान शेष संतुलन को ठीक करने के उपाय – (विवरण सहित) 5
1) मौद्रिक उपाय – 1) मुद्रा संकुचन — 2) मुद्रा अवमूल्यन —
2) अमौद्रिक उपाय – 1) आयातों में कमी — 2) निर्यातों का प्रोत्साहन —

अथवा

लोचपूर्ण विनिमय दर के पक्ष में कोई चार तर्क — (विवरण सहित)

1) आर्थिक प्रगति की सूचक –
2) भुगतान संतुलन में सुधार –
3) अवमूल्यन सम्भव –
4) स्वतन्त्र आर्थिक नीति –

उ० 22 आयकर की विशेषताएँ – (विवरण सहित) 5
1) लोचदार —, 2) कर उत्पादकता —
3) आय की असमानता को दूर करने वाला —
4) उद्गम पर वसूली — 5) विभिन्न श्रेणियों में विभाजन – ।

अथवा

घाटे के बजट के प्रभाव – 1) घाटे की वित्त व्यवस्था से मुद्रा का चलन तेज बढ़ जाता है। 2) घाटे की वित्त व्यवस्था से निजी निवेशों को प्रोत्साहित किया तथा नये-नये विनियोगकर्ता भी उत्पादन के क्षेत्र में प्रवेश पाने लगे हैं। 3) घाटे के बजट के फलस्वरूप उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति बढ़ती है जिससे सम्पूर्ण माँग में वृद्धि होती है। 4) घाटे के बजट का आय के वितरण पर

क्रमशः – P.T.O

विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में कीमतें बढ़ती हैं।
(5) घाटे की वित्त-व्यवस्था का प्रयोग करते समय सरकारी नियंत्रणों का होना आवश्यक है।

उ० 23 विदेशी विनिमय दर को प्रभावित करने वाले तत्व — (5)
(1) विदेशी व्यापार की स्थिति —
(2) बैंकों की क्रियाएँ — (3) सट्टेबाज़ों की क्रियाएँ —
(4) राजनीतिक दशाएँ — (5) स्टॉक एक्सचेंज का प्रभाव —

अथवा

व्यापार सन्तुलन की अपेक्षा भुगतान संतुलन अधिक महत्वपूर्ण है। किसी राष्ट्र की अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने में भुगतान संतुलन का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यापार संतुलन अपूर्ण होता है। उससे राष्ट्र की आर्थिक स्थिति के बारे में सही-सही जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती। भुगतान संतुलन वास्तव में एक आर्थिक बैरोमीटर है जिससे किसी राष्ट्र की आर्थिक दशा का अनुमान लगाया जा सकता है।

उ० 24 उत्पादन फलन के आवश्यक तत्व — विशेषताएँ — (5)
(1) पूँजी सीमितता — (2) तकनीकी ज्ञान एवं विशिष्टीकरण —
(3) संगठनात्मक योग्यता — (4) ~~[illegible]~~ बाज़ार क्षेत्र —
(5) क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होना —

अथवा

क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम की सीमाएँ —
(1) कुछ साधन स्थिर तथा एक साधन परिवर्तनशील होता है।
(2) संगठन व उत्पादन विधि में कोई परिवर्तन नहीं होता।
(3) परिवर्तनशील साधन की सब इकाइयाँ समरूप होती हैं।

P.T.O

(4) इसमें यह मान लिया जाता है कि उत्पादन के साधनों के मिलने के अनुपात में इच्छानुसार परिवर्तन सम्भव है।

5) नियम का सम्बंध वस्तु के मूल्य से न होकर भौतिक मात्रा से होता है।

उ० 25 भारत सरकार की आय की गैर-कर मदें — (विवरण सहित) (5)

(1) सार्वजनिक उपक्रम — (2) मुद्रा एवं टकसाल —

(3) रेलवे — (4) डाक व तार —

(5) ऋण सेवाएँ अथवा ब्याज प्राप्तियाँ — ।

अथवा

केन्द्र सरकार के व्यय — (विवरण सहित)

(1) ऋणों पर ब्याज — (2) प्रतिरक्षा राजस्व व्यय —

(3) नागरिक प्रशासन व्यय — (4) सामाजिक सेवाएं —

(5) सार्वजनिक निर्माण कार्य — ।

— समाप्त —

पंजी० क्रमांक = 12/2638

Alzam